

सूरह अबस^[1] - 80

سُوْرَةُ عَبَسَ

सूरह अबस के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 42 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((अबस)) शब्द से हुआ है जिस का अर्थ ((मुंह बसोरना)) है। इसी से इस सूरह का नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 10 तक में एक विशेष घटना की ओर संकेत कर के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ध्यान दिलाया गया है कि आप अभिमानियों तथा दुराग्रहियों के पीछे न पड़ें। उस पर ध्यान दें जो सत्य की खोज करता और अपना सुधार चाहता है।
- आयत 11 से 16 तक में कुरआन की महिमा का वर्णन किया गया तथा बताया गया है कि जिस की ओर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बुला रहे हैं वह कितनी बड़ी चीज़ है। इस लिये जो इस का अपमान करेंगे वह स्वयं अपना ही बुरा करेंगे।
- आयत 17 से 23 तक में प्रलय के इन्कारियों को चेतावनी दी गई है। तथा फिर से जीवित किये जाने के प्रमाण अल्लाह के पालनहार होने से प्रस्तुत किये गये हैं।

1 यह सूरह मक्की है। भाष्य कारों ने इस के उतरने का कारण यह लिखा है कि एक बार ईशदूत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का के प्रमुखों को इस्लाम के विषय में समझा रहे थे कि एक अनुयायी अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम (रजियल्लाहु अन्हु) ने आ कर धार्मिक विषय में प्रश्न किया। आप उसे बुरा मान गये और मुंह फेर लिया। इस पर आप को सावधान किया गया कि धर्म में संसारिक मान मर्यादा का कोई महत्व नहीं, आप उसी पर प्रथम ध्यान दें जो सत्य को मानता तथा उस का पालन करता है। आप का दायित्व यह भी नहीं है कि किसी को सत्य मनवा दें। फिर कुरआन ऐसी चीज़ नहीं है जिसे विनय और खुशामद से प्रस्तुत किया जाये। बल्कि जो उस पर विचार करेगा तो स्वयं ही इस सत्य को पा लेगा। और जान लेगा कि जिस निराकार शक्ति ने सब कुछ किया है तो पूजा भी मात्र उसी की करें और उसी के कृतज्ञ हों। फिर यदि वह अपनी कृतघ्नता पर अड़े रह गये तो एक दिन आयेगा जब यह मान मर्यादा और उन का कोई सहायक नहीं रह जायेगा और प्रत्येक के कर्मों का फल उस के सामने आ जायेगा।

- अन्त में आयत 42 तक क्यामत का भ्यावह चित्र तथा सदाचारियों और दुराचारियों के अलग-अलग परिणाम बताये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (नबी ने) त्योरी चढ़ाई तथा मुँह फेर लिया।
2. इस कारण कि उस के पास एक अँधा आया।
3. और तुम क्या जानो शायद वह पवित्रता प्राप्त करे।
4. या नसीहत ग्रहण करे जो उस को लाभ देती।
5. परन्तु जो विमुख (निश्चन्त) है।
6. तुम उन की ओर ध्यान दे रहे हो।
7. जब कि तुम पर कोई दोष नहीं यदि वह पवित्रता ग्रहण न करे।
8. तथा जो तुम्हारे पास दौड़ता आया।
9. और वह डर भी रहा है।
10. तुम उस की ओर ध्यान नहीं देते।^[1]
11. कदापि यह न करो, यह (अर्थात् कुर्आन) एक स्मृति (याद दहानी) है।

عَبَسَ وَتَوَلَّى ۝

أَنْ جَاءَهُ الْأَعْمَى ۝

وَمَا يَذُرُّكَ لَعَلَّهٗ يَرْزَىٰ ۝

أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرَىٰ ۝

أَمَّا مَنِ اسْتَغْنَىٰ ۝

فَأَنتَ لَهُ تَصَدَّىٰ ۝

وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزُلِيٰ ۝

وَأَمَّا مَنْ جَاءَكَ يَسْعَىٰ ۝

وَهُوَ يَخْشَىٰ ۝

فَأَنتَ عَنْهُ تَلَهَّىٰ ۝

كَلَّا إِنَّمَا تَذَكَّرُ ۝

- 1 (1-10) भावार्थ यह है कि सत्य के प्रचारक का यह कर्तव्य है कि जो सत्य की खोज में हो भले ही वह दरिद्र हो उसी के सुधार पर ध्यान दे। और जो अभीमान के कारण सत्य की परवाह नहीं करते उन के पीछे समय न गवायें। आप का यह दायित्व भी नहीं है कि उन्हें अपनी बात मनवा दें।

- | | |
|---|---|
| 12. अतः जो चाहे स्मरण (याद) करे। | فَمَنْ شَاءَ ذَكِّرْهُ ۝ |
| 13. माननीय शास्त्रों में है। | فِي صُحُفٍ مُّكْرَمَةٍ ۝ |
| 14. जो ऊँचे तथा पवित्र हैं। | مَرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۝ |
| 15. ऐसे लेखकों (फ़रिश्तों) के हाथों में है। | بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ۝ |
| 16. जो सम्मानित और आदरणीय हैं। ^[1] | كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۝ |
| 17. इन्सान मारा जाये वह कितना कृतघ्न (नाशुक्रा) है। | قُلِ الْإِنْسَانُ مَا أَكْفَرُهُ ۝ |
| 18. उसे किस वस्तु से (अल्लाह) ने पैदा किया? | مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۝ |
| 19. उसे वीर्य से पैदा किया, फिर उस का भाग्य बनाया। | مِنْ نُّطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَرَهُ ۝ |
| 20. फिर उस के लिये मार्ग सरल किया। | ثُمَّ السَّبِيلَ يَسْرَهُ ۝ |
| 21. फिर मौत दी फिर समाधि में डाल दिया। | ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ۝ |
| 22. फिर जब चाहेगा उसे जीवित कर लेगा। | ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنشَرَهُ ۝ |
| 23. वस्तुतः उस ने उस की आज्ञा का पालन नहीं किया। ^[2] | كَلَّا لَمَّا يُفْضِ الْأَمْرُ ۝ |
| 24. इन्सान अपने भोजन की ओर ध्यान दे। | فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَى طَعَامِهِ ۝ |

1 (11-16) इन में कुर्आन की महानता को बताया गया है कि यह एक स्मृति (याद दहानी) है। किसी पर थोपने के लिये नहीं आया है। बल्कि वह तो फ़रिश्तों के हाथों में स्वर्ग में एक पवित्र शास्त्र के अन्दर सुरक्षित है। और वही से वह (कुर्आन) इस संसार में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारा जा रहा है।

2 (17-23) तक विश्वास हीनों पर धिक्कार है कि यदि वह अपने अस्तित्व पर विचार करें कि हम ने कितनी तुच्छ वीर्य की बूँद से उस की रचना की तथा अपनी दया से उसे चेतना और समझ दी परन्तु इन सब उपकारों को भूल कर कृतघ्न बना हुआ है, और पूजा उपासना अन्य की करता है।

25. हम ने मूसलाधार वर्षा की।
26. फिर धरती को चीरा फाड़ा।
27. फिर उस से अब उगाया।
28. तथा अंगूर और तरकारियाँ।
29. तथा जैतून एवं खजूर।
30. तथा घने बाग।
31. एवं फल तथा वनस्पतियाँ।
32. तुम्हारे तथा तुम्हारे पशुओं के लिये^[1]
33. तो जब कान फाड़ देने वाली (प्रलय) आ जायेगी।
34. उस दिन इन्सान अपने भाई से भागेगा।
35. तथा अपने माता और पिता से।
36. एवं अपनी पत्नी तथा अपने पुत्रों से।
37. प्रत्येक व्यक्ति को उस दिन अपनी पड़ी होगी।
38. उस दिन बहुत से चेहरे उज्ज्वल होंगे।
39. हंसते एवं प्रसन्न होंगे।
40. तथा बहुत से चेहरों पर धूल पड़ी होगी।

- اِنَّا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا ۝
 ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا ۝
 فَاَنْبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ۝
 وَاعْنَابًا وَزُطًّا ۝
 وَزَيْتُوْنًَا وَنَخْلًا ۝
 وَحَدَآئِقَ غُلْبًا ۝
 فَجَالِكُمْ ۝
 مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاٰنْعَامِكُمْ ۝
 فَاِذَا جَاءَتِ الصَّاعَةُ ۝
 يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيهِ ۝
 وَاٰلِهٖ وَاٰبِهٖ ۝
 وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِ ۝
 لِكُلِّ اِمْرٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيْهِ ۝
 وَجُؤًا يَوْمَئِذٍ مُّسْفَرًا ۝
 صَاحِكًا مُّسْتَبْشِرًا ۝
 وَوُجُوْهُ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرًا ۝

1 (24-32) इन आयतों में इन्सान के जीवन साधनों को साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो अल्लाह की अपार दया के परिचायक हैं। अतः जब सारी व्यवस्था वही करता है तो फिर उस के इन उपकारों पर इन्सान के लिये उचित था कि उसी की बात माने और उसी के आदेशों का पालन करे जो कुरआन के माध्यम से अन्तिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है। (दावतुल कुर्आन)

41. उन पर कालिमा छाई होगी।
 42. वही काफिर और कुकर्मि लोग
 हैं।^[1]

تَرْمِهَا قَتَرَةً ۖ
 أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرَةُ الْفَجَرَةُ ۖ

1 (33-42) इन आयतों का भावार्थ यह है कि संसार में किसी पर कोई आपदा आती है तो उस के अपने लोग उस की सहायता और रक्षा करते हैं। परन्तु प्रलय के दिन सब को अपनी अपनी पड़ी होगी और उस के कर्म ही उस की रक्षा करेंगे।